

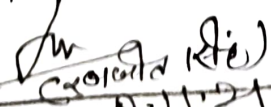
फर्द अहकाम

(नियम 26)

अज अदालत 3499131 सीकराी सिकराय (दोहा.)

दीरालाल सरकार बनाम काली देवी वर्गासह

किरम मुकदमा 88, 188, B.T.A. मु० नं० 25/2021

तारीख हुकम	हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज	नंबर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तामील में जारी हुए
	<p>हिन्दू उत्तराधिकार नियमों में स्पष्ट प्रावधान है कि एक व्यक्ति जबकि पिता या दत्तक पिता में से किसी एक की भूमि धारित कर सकता है। वादी का भाई देव्या व प्रति. सं. 1 ता 3 के प्रति। पिता माय घरवाला में दत्तक पुत्र रद्द कर की हैसियत से खतरेदार व निवासरत रहते हैं। इस आधार पर देव्या का पंजीक भूमि पर कोई एक अधिकार स्थाप नहीं रह आता है।</p> <p>अतः वादी वाद की म. सं. 2 व 3 वर्गीक भूमि में देव्या के माय दत्तक भूमि पर खतरेदारी घोषणा का अधिकारी है यह तमकी वादी के पक्ष में निर्णित की जाती है।</p> <p><u>तमकी सं. 2</u> → वादी प्रतिवादीगण ता 3 का स्थायी निषेधाज्ञा से पाकंद करवाने का अधिकारी है।</p> <p>— वादी</p> <p>तमकी सं. 1 के आधार पर वादी खतरेदारी घोषणा का अधिकारी होने के कारण देव्या के वारिस प्रति. सं. 1 ता 3 का स्थायी निषेधाज्ञा से पाकंद करवाने का अधिकारी है।</p> <p>अतः यह तमकी वादी के पक्ष में निर्णित की जाती है।</p> <p><u>आदेश</u></p> <p>माय गबोरा के खता सं. 53 व 335 में देव्या पुत्र बुद्धा के माय दत्तक भूमि के विरुद्ध वादी हरिप्रसाद की खतरेदार घोषित किया जाता है तथा प्रति. ता 3 की स्थायी निषेधाज्ञा से पाकंद किया जाता है कि वह खतरेदार घोषित भूमि में कोई हस्तक्षेप व हस्तान्तरण (रहम वेगान वगैरे) नहीं करे।</p> <p>आदेश मुताबिक डिप्टी व तहसील जारी होकर पंजावली फसल शुमार हो।</p> <p style="text-align: right;">  (उपस्थित) (सी. सं.) 8-11-21 </p>	